अंतरा-शब्दशक्ति

अर्पित तुम्हें

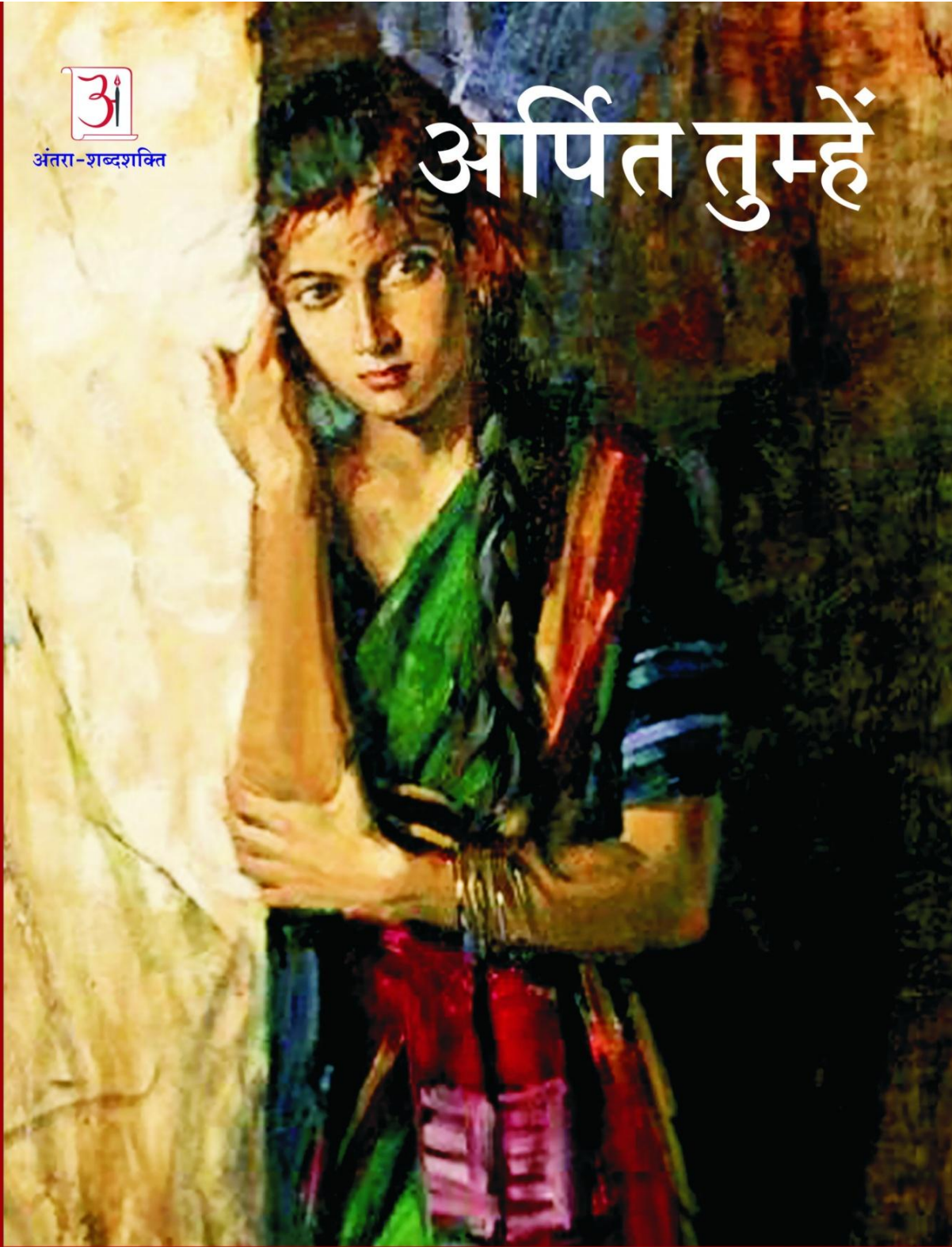

काव्य संग्रह

अर्पणा संत सिंह

अर्पित तुम्हें

(काव्य संग्रह)

अर्पणा संत सिंह

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-48-3

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © अर्पणा संत सिंह

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Arpit Tumhe' by "Arpana Sant Singh'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

"अर्पित तुम्हें" में संकलित मेरी कुछ रचनाएं पूर्ण रूप से समर्पित हैं मेरी भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभूतियों, प्रेम, स्नेह, चिंतन एवं स्मृतियों को और हृदय के प्रत्येक स्पंदन के साथ जागृत एवं विलय होती मृदुल भावों । हर स्त्री का रूप बहुआयामी है- बेटी, बहन, पत्नी, प्रेयसी, मां, नानी-दादी और भी कई रिश्ते। प्रत्येक रिश्ता एक एक मोती की भांति हैं जिससे एक बेहद खूबसूरत माला बनता है जो जीवन को सार्थकता और संतुष्टि देती हैं । बाल काल से पिता को अपना क्षण क्षण सर्वत्र न्यौछावर करते, संघर्ष करते देखा ताकि वह अपने परिवार हर प्रकार की सुविधा और खुशियां उपलब्ध करा सकें। उनके संघर्ष, समर्पण और व्यक्तित्व के कारण वह हमेशा मेरे महानायक रहे जो मार्गदर्शक और प्रेरणा के स्रोत रहे। उनका एक एक संघर्ष स्मृतियों के रूप में घनीभूत रहा इतने बर्षों अर्द्धचेतन हृदय में, जो शब्दों के माध्यम से बूंद बूंद बरसा हैं " संघर्ष ही मेरा जीवन रहा"। अपने पिता का प्रेम, निर्मल, स्नेहिल, पवित्र हृदय, समर्पण और साहस के साथ साथ मेरी विवशता की अनुभूति करता "तू ही मेरा संत महान" में । प्रेम ही प्रत्येक संबंध की नींव है लेकिन आखिर यह प्रेम क्या है? प्रेम की तलाश में " सत्यम् शिवम् सुन्दरम् " ।पति पत्नी के रिश्ते की गहराईयों को समझने का प्रयास करती रचना है "जीवनसाथी साथ निभाना"।

एक स्त्री की अस्तित्व को संपूर्णता एवं सार्थकता मिलतीं है उसके संतान से।संतान उसके जीवन की सबसे बड़ी पूंजी भी हैं और सफलता एवं सुख की कूंजी भी जिसमें हर माँ खुद को तलाश करती हैं-इस तलाश को दर्शाता मेरी रचना "तुझमें ही खुद की तलाश" है। स्त्री अपना सर्वस्व यहां तक की अपने अस्तित्व का अंश अंश त्याग कर किसी पुरुष से प्रेम करतीं हैं किंतु पुरुष उस स्तर तक प्रेम नहीं कर पाता। "मैं तुम्हारे लिए क्या हूँ" में इन्हीं प्रश्नों की उत्तर पाने का प्रयास हैं। जब प्रेम सच्चे हृदय और आत्मा से किया जाएं तो शरीर को जीवित रखने के लिए और आत्मा की तृप्ति का साधन हो जाता हैं।उपेक्षा, तिरस्कार से जीवन त्रिशंकु सा प्रतीक होने लगता है, मोक्ष के लिए विचलित होने लगता है इन्हीं भावों के साथ है "तेरे बिन...त्रिशंकु सा" ।" जीवन हो गई

प्रतीक्षालय" में राधा के प्रेम, समर्पण और भक्ति भावना को समझने का प्रयास किया गया हैं।

"तुम एहसास तो करों" में नायिका नायक को बतातीं हैं कैसे विरहा के बाद भी वह अपने एहसासों के जरिए पल पल उसके साथ रहतीं है। मनुष्य के जीवन के प्रत्येक स्तर चाहे वह वैज्ञानिक , शरीरिक, मानसिक,आध्यात्मिक हों कैसे उसकी भावनाएं ,उसकी आवश्यकता, शरीर, और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है-इसे वर्णित करने का प्रयास किया गया है "विलुप्ति के कगार', "कितना अंधेरा" के जरिए समाज में फैलें अराजकता पर विचार किया गया है।वहीं "अब बस करों" के माध्यम से देशवासियों को देश के भविष्य के लिए साहस और शोर्य को अपनाने के लिए उद्वेलित करने का प्रयास किया गया है।

अर्पणा संत सिंह

अनुक्रमणिका

1. संघर्ष ही मेरा जीवन रहा	**5**
2. तू ही मेरा संत महान	**6**
3. सत्यम् शिवम् सुन्दरम्	**7**
4. जीवनसाथी साथ निभाना	**8**
5. तुम में ही खुद की तलाश है	**9**
6. मैं तुम्हारे लिए क्या हूँ	**10**
7. तेरे बिन त्रिशंकु सा	**11**
8. जीवन हो गया प्रतीक्षालय	**12**
9. तुम एहसास तो करो	**13**
10.विलुप्ति के कगार	**14**
11.कितना अंधेरा	**15**
12.अब बस करो	**16**

संघर्ष ही मेरा जीवन रहा

संघर्ष ही मेरा ज़ीवन रहा
अपनों के लिए संघर्ष करता रहा
अपनों के सुख की तलाश में
उनके सुविधा की चाह में
उनके राहों के कांटो को चुनता रहा
भले हाथ हुए लहुलुहान मेरे
फिर भी होंठों पर हंसी बुनता रहा
संघर्ष ही मेरा ज़ीवन रहा।

उनकी खुशियां ही मेरा ज़िद रहा
हर दिन नया रास्ता तलाशता रहा
मुश्किल रास्ते पर उनके सपनो के
सहारे चलता रहा
अपनी थकान को उनके मुस्कान से
भुलता रहा
यू ही मंजिल मुझे मिलता रहा
क्या कहूँ संघर्ष ही मेरा ज़ीवन रहा।

संघर्ष का यह पथ अग्निपथ सा
रहा
उस तपिश को नन्हीं किल्कारियों से
भुलता रहा
उनसे नई ऊर्जा उत्साह मिलता रहा
फिर नई मंजिल की तलाश में यूँ ही
बड़ता रहा
जो भी अपनों से मेरे जुड़ता रहा
उन्हे अपनों से बढ कर अपना
मानता रहा
उनसे प्रेम स्नेह करता रहा
अपने मेरे बढते रहे संघर्ष भी मेरा
बढता रहा
क्या कहूँ संघर्ष ही मेरा ज़ीवन रहा।

कभी माँ पिता के लिए श्रवण बनता
रहा
कभी भाई बहन के लिए लक्षमन
भरत रहा
कभी अर्धांगनी के लिए अर्धनागेश्वर
बनता रहा
कभी संतान के लिए आदर्श पिता
बनता रहा
हर रिश्ते को निभाने की कोशिश
करता रहा
ज़ीवन के अग्निपरीक्षाओ में कितना
उत्तीर्ण रहा
कितना सफल रहा
ये तो मेरे अपने ही जानते है
जो मेरे ज़िने का आधार रहा
क्या कहूँ संघर्ष ही मेरा ज़ीवन रहा।

वक्त एक सा भला कब रहा
कभी वह वक्त भी आया ज़ब
हर सांस के लिए भी संघर्ष करता
रहा
वो मेरे जीने का मकसद रहा
तो उनके लिए भी मैं धरती अम्बर
रहा
उनसे कैसे उनका ज़मीन आकाश
छिनता
मैं खुद और खुदाई से लड़ता रहा
अपने मन के हौसले से
तन के रोगो को पटकनी देता रहा
उनसे मेरा प्रेम ही मेरे संघर्ष का
आधार रहा
क्या कहूँ संघर्ष ही मेरा ज़ीवन रहा।

तू ही मेरा संत महान

न जाने कितनी ही बार
लड़खडाते कदमो को संभाला होगा
न जाने कितनी ही बार
गिरने से बचाया होगा
न जाने कितनी ही बार
गोद में लेकर थपकी दी होगी
न जाने कितनी ही बार
कितने जतन किये होगें
मेरी हंसी खुशी के लिए
न जाने कितनी ही बार
मेरे निराशा के काली रातों को
आशा की सूबह में बदला होगा
न जाने कितनी ही बार मेरे
हताश को जोश में बदला होगा
न जाने कितनी ही बार
मेरे मौन से ही ,
मेरे दिल का हर एहसास समझा
होगा
ज़ीवन में कितने रिश्ते है पर
किसी रिश्ते में इतना ज़ीवन नहीं ,
सुख नहीं, खुशी नहीं, शांति नहीं,
तू अपने साहस मेहनत से
मुझे सिंचता रहा
तू ही मेरी धरती भी
तू मेरे सम्मान सुरक्षा का
संरक्षक बना रहा
तू ही मेरा आकाश भी
तू बूंद बूंद कर स्नेह
प्रेम से ज़ीवन को भरता रहा
तू ही मेरा सागर भी
निर्मल कोमल पवित्र सा ह्रदय तेरा
तू ही मेरा गंगा भी
तू उपदेशक मार्गदर्शक गीता सा
तू ही मेरा कृष्ण भी
तू संस्कार मर्यादा का धोतक सा
तू ही मेरा राम भी
जो भी मेरे पास है सब तेरा दिया
हुआ
तू ही मेरा दाता भी
तू ही मेरे ज़ीवन का सत्य भी,
शिवम भी, सुन्दर भी
तू ही मेरा संत महान .
ख्याहिशे मेरी भी है
तेरे कंधे का बोझ कुछ कम कर सकूँ
तेरे ज़ीवन के तप्त मरू में
बरगद सा छाँव बन सकूँ
तेरे मान सम्मान में चार चांद लगा
सकूँ
तेरे ज़ीवन के लिए न विप्लव बन
सकी
न हुंकार सकी , न ललकार सकी
समाज की रीति - रिवाजों को
न तोड़ सकी उस बंदिशों को
मैं अर्पणा न बन सकी ,
कुछ न अर्पण कर सकी
न शोभा ही बन सकी ,
न तेरी शोभा बढा सकी
किंतु ये कोशिशें ख्याहिशें ही क्यों
आखिर कब मानव ईश्वर को
कुछ भी लौटा पाता है
क्या यह संभव है कि
ईश्वर के उपकारो का कर्ज़ चुका
पाएगा
हम जितने भी आधुनिक हो
वैज्ञानिक हो
यह असंभव ही रहा सदा
यह असंभव ही रहेगा सदा
पूजा अर्चना भी तो
आत्मसंतुष्टि का ही मार्ग है।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

मैं उत्थान में हूँ पतन में नहीं
मैं उत्कृष्टता में हूँ निकृष्टता में नहीं
मैं आशा में हूँ निराशा में नहीं
मैं उपकार में हूँ अपकार में नहीं
मैं निष्कपट में हूँ कपट में नहीं
मैं चेतना में हूँ ज़ड़ में नहीं
मैं संतोष में हूँ लोभ में नहीं
मैं योग में हूँ भोग में नहीं
मैं हित में हूँ अहित में नहीं
मैं सत्य में हूँ असत्य में नहीं
मैं हर्ष में हूँ विषाद में नहीं
मैं मनुष्यता में हूँ पशुता में नहीं
मैं धर्म में हूँ अधर्म में नहीं
मैं पुण्य में हूँ पाप में नहीं
मैं मोक्ष हूँ बंधन नहीं
मैं अलौकिक हूँ लौकिक नहीं
मैं अमर हूँ क्षणभंगुर नहीं
मैं अमृत हूँ विष नहीं
मैं एक दिवस में नहीं पल पल में हूँ
मैं दिखावा में नहीं समर्पण में हूँ
मैं हूँ तो सुख शांति है नहीं तो कलेश द्धेष है
मैं सर्वव्यापिक निराकार अनंत अकथनीय
अद्धितीय अतुलनीय अवर्णनीय अभूतपूर्व अनुपम हूँ
मैं वात्सल्य में हूँ भातृत्व में हूँ
भक्ति में हूँ मानवता में हूँ
केवल युगल प्रेमियों के प्रेम में नहीं,
वासना में मैं नहीं हूँ
मैं दया करुणा त्याग समर्पण अर्पण में हूँ
मैं प्रत्येक संबन्ध की मधुरता में हूँ संजीवता में हूँ
मैं ही स्त्रोत्र हूँ ज़ीवन का
मैं ही गीता कुरान बाईबल हूँ
मैं ईश्वर के समान हूँ
मैं सत्य शिव सुन्दर हूँ
मैं हूँ तो धरा पर ही स्वर्ग हैं
मैं ही प्रेम प्यार इश्क मोहब्बत
चाहे जो नाम दे दो.....।

जीवनसाथी साथ निभाना

अग्नि के फेरे लें सात
साक्षी मान ध्रुव तारा को
जो मैं और तुम
दो अलग अलग
चेहरे, दिल,शरीर,
आत्मा,व्यक्तित्व,अस्तिव,
परिवार,दोस्त, वातावरण,
फिर भी हम ऐसे एक दूसरे मे ऐसे
समाहित हुए
मेरा सब कुछ तेरा हुआ
तेरा सब कुछ मेरा हुआ
तेरा मान, सम्मान, स्वभिमान
सुख, दुःख ,सफलता, धन,
सम्पत्ति,परिवार, जिम्मेदारियां हुई
मेरी
और मेरी हुई तेरी
मेरी ख्याहिशों को
ख्वाबों को
तू ने न सिर्फ समझा
बल्कि सिचित किया प्रेम से
पोषित किया प्रोत्साहन से
पल्वित किया सहयोग से
यदि मेरा वजूद चाँद सा हैं
तो तुम मेरे दिवाकर हो
तुम्हारा सत्य ,स्वभाव,
निर्मल, मन
मेरा सौभाग्य है
हम एक दूसरे के पूरक भी है
मेरे जीवनसाथी जीवन भर
हर पल
हर कदम
तूने जिस शिद्दत से
साथ निभाया
यूं ही साथ निभाना
केवल इस जीवन ही नहीं
जन्म जन्मांतर तक।

तुम में ही खुद की तलाश है

लोग कहते है तू मेरी परछाई है
मैं कहती हूँ तू मुझमे है मैं तुझमे हूँ
ये क्या एहसास है कि तुम में ही खुद की तलाश है
ज़ब भी देखूँ तुम्हे मेरा अक्स नज़र आये

आईना है मेरा तुझे देख ही श्रृंगार हो जाये
ये क्या एहसास है कि तुम में ही खुद की तलाश है
मेरी दुआ खुदा की रहमत की मुकम्बल तस्वीर हो तुम
न चाह कर भी मेरे अरमानों मंजिलों की राहगीर हो तुम

ये क्या एहसास है तुम में ही खुद की तलाश है
तू खुदा की नेमत से मेरे आंगन का नजाकत भरी गुलाब है
तेरे खुशबू से घर मेरा गुलजार है
ये क्या एहसास है कि तुम में ही खुद की तलाश है

बंदिशों को मेरी रंजिश न समझ
फिर्क को मेरी हुकूम न समझ
इल्तजा को मेरी फरमान न समझ
ये क्या एहसास है कि तुम में ही खुद की तलाश है

तुम से खुद को दूर नहीं कर पाती हूँ
ये क्या एहसास है कि तुम में ही खुद की तलाश है...।

मैं तुम्हारे लिए क्या हूँ

न चाहते हुए भी अनायास ही एक
प्रश्न
उलझा जाता है मेरे सम्पूर्ण
अस्तित्व को
आखिर "मैं तुम्हारे लिए क्या हूँ"?
स्वयं का "स्व" को पूर्ण अर्पित किया
स्वार्थ का स्व और अर्थ भी तुम ही
रहे
स्वाभिमान का स्व और अभिमान
भी त्यागा
स्वहित का स्व और हित भी स्वाहा
किया
स्वेच्छा से स्व की इच्छा भी तेरी
सुख समृद्धि ही रही
स्व की स्वाधीनता को त्याग तेरी
अधीनता स्वीकार किया
जिस प्रकार मेरी आशा-निराशा
हर्ष- विषाद, सफलता-असफलता
ऊर्जा के तुम केंद्र रहे, मेरा जीवन
उसकी परिधि
किंतु विडंबना आखिर मैं तुम्हारे
लिए
सदैव ही एक निष्प्राण निष्प्रभावी
मात्र एक वस्तु रही
जिसमें कोई संवेदना नहीं, चेतना
नहीं,
मेरे मृदुल हृदय को ही नहीं
मेरी आत्मा को भी तुमनें खंडित
किया
बारम्बार अपने पुरूषार्थ के अहंकार
में
प्रत्येक युग में, प्रत्येक रूप में,
प्रेमी के रूप में ,तेरे प्रेम में,
परिवार से, समाज से,
न जाने कितनी अवहेलना सही
किंतु प्रेमी के रूप में
आखिर कैसे प्रतीक्षा का अभिशापित
जीवन दिया
तो पति के रूप में
अग्निपरीक्षा का पथ निर्माण किया
समाज की कुंठित मानसिकता
या तुम्हारी संकीर्ण मानसिकता
किंतु अवहेलना प्रताड़ित मैं
आखिर कैसे मुझे वनवास दिया
हर युग में अथाह अनंत प्रेम के
बदले
मुझे क्षण क्षण तिरस्कार मिला
सदैव ही तेरी परम इच्छा रही
मैं स्वाभिमान के उच्च नभ से
समा जाऊं धरा के गर्भ में... ।

तेरे बिन त्रिशंकु सा

कैसे संभव हो सकता है
तुम्हारे बिना जीवन।
तुम्हारे विश्वास की हवाएं
आँक्सीजन सी
मेरी नस-नस को पोषित करती है
जहाँ तुम्हारे प्रेम का नीर
न केवल मेरे मन संसार को
बल्कि मेरी आत्मा की भी
तृप्ति की साधना है
जीवन पथ पर
चुनौतियों की तपिश ने
हृदय में वेदना से उपजे
और कलेश क्लांत से भरे
मेरे नितांत वीरान मरूस्थल
जैसे जीवन में
तुम्हारे प्रेम की बरसात
मुझे हौले हौले भींगाकर
शांति की वादियों में ले जाती है
जहाँ इस वास्तविकता के
स्वार्थ से भरी धरती में
कल्पनाओं के गगन में
सिर्फ तुम ही मेरे दिवाकर बन
मेरे अस्तित्व के कण कण को
प्रकाशवान और ऊर्जावान कर देते
हो।
कभी ऐसा भी लगता है कि
तुम कभी कितने कठोर अस्थिर
अडिग
अपने स्थान पर पाँव जमा लेते हो
और तब भी मैं ही नादान सी
अपनी ही निश्चित सीमा पथ पर
तुम्हारे स्नेह की आशा लिए
तुम्हारे चारों ओर घूमती
अपने हृदय की ऋतुओं को
नियंत्रित करती, परिवर्तित करती
न चाहते हुए भी
आशा-निराशा, सुख-दुःख
रात-दिन समस्त संसार के
सारे रिश्तों में सिमटकर
सिर्फ तुम में समाहित हो जाने का
विश्वास लिए
स्वयं से अधिक कुछ ईश्वर जैसा
जो केवल पवित्र ही हो सकता है
और कुछ नहीं
जिसमें सिर्फ और सिर्फ अवगुणों से
दूर,
बस सद्गुण स्वीकार्य है
उसमें खो जना चाहती हूँ ।
संभव होता सब
यदि यह वास्तविकता होती
पर मात्र कल्पना और स्वप्न
वास्तविक नहीं होते ।
जीवन पथ पर वास्तविकताएँ
इतनी विष भरी होती है कि
आत्मा की मृत्यु निश्चित ही है
जिससे शेष जीवन
एक त्रिशंकु सा बन जाता है ।

जीवन हो गया प्रतीक्षालय

गुण-अवगुण, हर्ष-विषाद,
रिक्तता-पूर्णता समस्त संबंध
समाहित तुझमें हैं
अस्तित्व का अंश अंश
मिथक संसार की समग्रता
समा गई कोठर में
तेरी मृदुल स्मृतियों के संग
मौन एकांत एकाग्रता से
स्व को समर्पित कर
पाऊं वो तृप्ति जो केवल था एक भ्रम
प्रतीक्षा मे तेरे संध्या से ही आशाओं की
दीप प्रज्वलित कर
तेरे प्रीत की बिंदिया से श्रृंगार कर
क्षण-क्षण प्रतिक्षण
हृदय के प्रत्येक स्पंदन
तेरे दर्शनाभिलाषी
व्याकुलता मे तेरी राह ताकें...
निराशाओं के पवन आतुर
बुझाने को मेरी जीवन ज्योति
किंतु अडिग आस्था तेरे प्रेम की
और प्रज्वलित कर जाती लौ को
भर देतीं रोशनी विरह मन को
शब्द शब्द तेरा सत्य सुन्दरम
नयनों मे हो कोई अश्रु सागर
नित निरन्तर जीवन हो गया प्रतीक्षालय,..।

तुम एहसास तो करो

तुम एहसास तो करो,...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ,..
जितना दिल धडकन के
बस उतनी ही करीब हूँ
तुम एहसास तो करो...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ

जो अलार्म तुम्हें नींद से जगाती है
उस के साथ ही मेरे उंगलियां का
तेरे बालों में फेरना
सुबह से किरणों के साथ
जैसे है सूर्य का साथ
वैसे ही है तेरा मेरा साथ
तुम एहसास तो करो,...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ

गर्मी से जब बेहाल होते हो
कभी शीतल हवाएं बन
तुम्हें छूकर निकलती हूँ
कभी प्रेम की बदरी बन
बूंद बूंद तुझमें समाती हूँ
तुम एहसास तो करो,...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ,...

सर्दी में ठिठुरते हो तो
कभी ताप भरी किरणें बन
तुम्हें उष्मता पहुंचाती हूँ
कभी रात की चांदनी में
घुल तुम्हें बहलाती हूँ
तुम एहसास तो करो,...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ,...

लम्हा लम्हा मौसम मौसम
बस तेरे करीब हूँ ,..
जैसे तू मेरे करीब है,...
तुम्हें यूँ ही एहसासों में
जिन्दा रखा है ताकि
रख सकूं खुद को भी जिन्दा
तुम एहसास तो करो,...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ,...

इस जनम इंतजार के रात काटी
तेरे एहसासों के दिये जलाकर
दूसरे जनम के सवेरे मे
तेरे साथ की रोशनी होगी
तुम एहसास तो करो,...
मैं तुम्हारे कितने करीब हूँ।

विलुप्ति के कगार

एक कोशिका
एक प्रकार कोशिकाओं से ऊतक
एक प्रकार ऊतकों से अंग
विभिन्न प्रकार के अंगों से जीव
जिसमें
विभिन्न प्रकार के तंत्र एवं ग्रंथि
खाद्य की भूख
प्रत्येक जीव में
शरीरिक ऊर्जा हेतु
किंतु मानव में
भूख है कई स्तर की
ताकि वह ऊर्जावान रहें
हर स्तर पर
शरीरिक
मानसिक
आध्यात्मिक
कभी कभी किसी
एक पर
पूर्ण रूप से निर्भर हो
तो आप अस्वस्थ्य के तिमिर गर्भ
में समा जाते है
मानसिक स्वास्थ्य
शरीरिक स्वास्थ्य के
सामस्त प्रयास विफल हो जाते हैं
स्वयं ही एक चक्रव्यूह रचते हैं
अपनी निर्भरता से अपेक्षाओं की
जब उपेक्षा से
खण्डित होती है
विश्वास
अथाह प्रेम
भ्रम
तब तंत्रों और ग्रंथियों का
असंतुलन हमें कर जाती हैं
ग्रसित कई रोगों से
क्यों इस तरह का भावनात्मक
जुड़ाव किसी से
क्यों इतना संवेदनशील होना
क्यों स्वाहा हो जाना
जो केवल कल्पना मात्र है
शाश्वत प्रेम
मनुष्य के किसी संबंध में नहीं
प्रेम हैं
किंतु
स्वार्थ के लिए
छल के लिए
मनोरंजन के लिए
ममत्व में भी लिप्त नहीं है
निस्वार्थ प्रेम
विलुप्ति के कगार पर निष्प्राण प्रेम
मात्र जीवित है
पशु-पक्षी के मातृत्व में,...।

कितना अंधेरा

हर ओर कितना अंधेरा हैं
धीमी धीमी सी रोशनी मे
चारो ओर से दुर्गंध आ रही हैं
मौत के कोहराम से मची है
हंसी खुशी जश्न...
मुझे चिंतित, व्याकुल
अश्रुधारा मे डूबी आँखों को देख कर
आश्चर्य मे हैं सभी और मैं भी
आओ...तुम भी आओं
शामिल हो
किंतु
क्या इन्हें दिख नहीं रही
ये लाशें...
कुछ तो इतनी क्षत विक्षत हैं
इतनी भयावह स्थिति में है
कांप रही हूं मैं
मैं कोशिश करती हूं दिखलाने की
देखो
प्रेम, सत्य, दया,
करुणा, समर्पण, निष्कपट,
संतोष, आशा, पुण्य,
धर्म, मनुष्यता
इनमें से कुछ तो जड़ हो चुके हैं
किंतु कुछ में अभी भी हल्की सी
चेतना शेष है...
चलों मानवता को पशुता मे विलीन
होने से रोकें
हम कब तक इन लाशों का बोझ
अपने कंधे पर ढोएंगे
तुम्हें ऐ लाशें दिखती हैं
लेकिन यही तो समझदारी है
दुनियादारी है
अपने स्वार्थ
सनक
साजिश
के सार्थक जीत का ही जश्न हैं
हृदयहीन हो चुकी संसार में
विश्वासघात का दंश
मुझे अशांत कलेष के लिए मिली है
ऐ तीसरी आँखें
यह श्रापित जीवन में
एक नये सवेरे
एक नई राह
एक मोक्ष द्वार
कहीं इसी संसार में है
मार्गदर्शन हो जीवन का
चिन्तन हो मस्तिष्क से
परीक्षण हो चंचल मन का
आत्मशुद्धि हो
हृदय, शरीर, मस्तिष्क,
अन्तरात्मा तभी आत्मवेदना का अंत
संभव है।

अब बस करो

अब बस करों
अब तो हुंकार भरो
रण का ऐसा विगुल बजा दो
धरा से गगन तक
साहस शौर्य का परचम लहरा दो
कि थर थर कापे हर दुश्मन
चाहे वह स्वदेशी हो
या फिर विदेशी
आतंकवाद का कोई धर्म नही
नक्सलवाद का कोई कर्म नहीं
बस मानवता के शत्रु है
माँ भारती पर कलंक हैं
इन शत्रुओं को
इन कलंक को
अब जड़ से मिटाना होगा
हश्र ऐसा करना होगा
कि परिणाम सोच नींद न आवे रातों को
न कोई सोच सके गद्दरी की
माना ये अग्निपथ होगा
अपनों के लहू से लथपथ होगा
वर्तमान भविष्य के शांति हेतु
इस संघर्ष पथ पर चलना होगा
एक बार फिर भारत में
महाभारत का युद्घ लड़ना होगा
ये अपने है
भटके है
गरीबी से परेशान है
इस तर्क भ्रम को छोडना होगा
अब भीष्म प्रतिज्ञा को तोड़ना होगा
अब न अर्जुन बन यदि इनका संहार किया
माँ भारती का न उद्धार किया
भारत का वर्तमान तो भीष्म सा हैं
लेकिन भविष्य को इस पीडादायक जख्मों से
मुक्त करना होगा
इन देशद्रोही के लहू से
माँ भारती का तिलक करना होगा,...।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **अर्पणा संत सिंह**

माता - श्रीमती सविता सिंह

पिता - श्री संतलाल सिंह

पति - डॉ. राजेश कुमार सिंह

शिक्षा - स्नातक (विज्ञान), स्नात्कोत्तर (हिन्दी), इंजीनियरिंग एन साफ्टवेयर एण्ड इनफोमेशन टेक्नोलॉजी।

पता - फ्लैट नं. 5174, नर्मदा अपार्टमेंट, विजया गार्डन, बारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)

मो. - 8789708260

ई मेल - arpana.arpana.singh@gmail.com, editorgrihaswamini@gmail.com

विधा - छंद मुक्त, गजल, शेर, लेख आदि।

कार्यक्षेत्र - 'गृहस्वामिनी' नामक महिलाओं की पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन

प्रकाशन - 'हमारा मैट्रो' दिल्ली से दैनिक प्रकाशन।, 'लोकजंग के अंतरा' भोपाल से, 'वर्तमान अंकुर' नोएडा, 'गजकेसरी' गाजियाबाद, 'नव एक्सप्रेस' जोधपुर, 'जागरुक जनता' जयपुर 'अकोदिया सम्राट' एवं 'नव प्रदेश' छत्तीसगढ़, 'विजय दर्पण टाइम्स' डू टाइम्स आदि से प्रकाशन साथ ही 'पंजाब टूडे' कनाडा से, 'राष्ट्र संवाद' दिल्ली और जमशेदपुर से, 'पूरी दुनिया' जमशेदपुर से प्रकाशित पत्रिकाओं मे प्रकाशन

- ई पत्रिकाओं में इटली (रोम) के 'अरीवा लिटेरारा' में अचिन्त साहित्य में 120 से भी ज्यादा कविताओं का प्रकाशन हो चुका है।

सम्मान - भारत विकास परिषद द्वारा सम्मानित किया गया।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-48-3

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com